I J R S S I S, Spl Issue (III), July-2020 : 180-182
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
OPEN ACCESS
e-ISSN 2347 – 8268 & 2347-8209 (P)
Original Article

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCE AND INFORMATION STUDIES
© VMS RESEARCH FOUNDATION www.ijrssis.in

भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग पर कोविड -19 का प्रभाव

A. Sen
Government P. G. College, Pipariya.
*Corresponding Author: drsenaneeta@gmail.com

शोध सारांश-

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग विकासशील देशों विशेषकर भारत में कृषि एवं कृषि से संबधित उद्योगों के पश्चात् सर्वाधिक रोजगार, स्वरोजगार एवं उद्यमिता के अवसर प्रदान करने वाला उद्योग है। परन्तु कोविड-19 नामक वैश्विक महामारी ने जहाँ सम्पूर्ण विश्व और अंतर्राष्ट्रीय अर्थ्व्यवस्था को एक बड़ा धक्का पहुचाया है वहीँ भारत भी इसके प्रभाव से अछूता नहीं है। भारत में लाखों लोगों को अपने रोजगार से हाँथ धोना पड़ा है भले ही वे लोग कृषि क्षेत्र के हों, औद्योगिक क्षेत्र के हों या सेवा क्षेत्र के, सभी क्षेत्रों को इस महामारी ने प्रभावित किया है, किसी को कम तो किसी को ज्यादा। वर्तमान शोध का उद्देश्य भारत के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग पर कोविड-19 के प्रभावों का अध्ययन करना एवं इन उद्योगों के समक्ष आई चुनौतियों व समस्याओं का अध्ययन करना तथा सरकार द्वारा उठाये क़दमों की समीक्षा करना साथ भी संभव समाधान खोजना है। इस महामारी को रोकने एवं इसे नियंत्रित करने के लिए देश भर में विशेषत: सामाजिक दूरी एवं लॉक-डाउन जैसे उपायों को अपनाया गया जिससे स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सभी स्तरों पर मांग व पूर्ती की समस्या उत्पन्न हुई है जिसके कारण आयात – निर्यात प्रभावित हुए है, सभी क्षेत्रों के उत्पादन नकारात्मक रूप से प्रभावित हुए है और धीरे – धीरे यह झटका विनिर्माण, खनन, कृषि, लोक प्रशासन, निर्माण - अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में फैल गया है और यह अर्थव्यवस्था के समग्र विकास दर को नीचे लाते हुए निवेश, रोजगार, आय और खपत को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर रहा है। अर्थव्यवस्था को संकट की स्तिथि से उभारने के लिए जरुरी है कि देश के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों पर विशेष ध्यान दिया जाये क्योकि य उद्योग देश के सकल घरेलु उत्पाद, रोजगार और निर्यात में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं साथ ही ग्रामीण भारत का भी अहम् हिस्सा हैं।

Key words: -

प्रस्तावना-

सम्पूर्ण विश्व वर्तमान में कोविड–19 नामक वैश्विक महामारी से जूझ रहा है इस महामारी से भारत भी अछूता नहीं रहा है। एक ओर जहां विश्व के ताकतवर देशों की अर्थव्यवस्था चरमरा गई है वहीं भारत भी अपनी अर्थव्यवस्था को सँभालने एवं उसे पटरी पर लाने की कोशिश कर रहा है। अनेकों सूत्रों की रिपोर्ट के अनुसार भारत में इतनी क्षमता है कि वह इस समस्या से, दूसरों देशों की अपेक्षा जल्द उभर सकता है और यह बात अभी तक लगभग तीन माह के अनुभव से कुछ हद तक सही भी प्रतीत होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 30 जनवरी 2020 को कोविड–19 को वैश्विक महामारी का दर्जा दिया तथा सम्पूर्ण विश्व को इसके दुष्प्रभावों से सचेत किया। भारत सहित अधिकाँश देशों ने कोविड–19 से निपटने हेतु लॉक-डाउन एवं सोशल डिस्टेंस (सामाजिक दूरी) को अपनाया। इन उपायों ने जहाँ एक ओर लोगों को कोरोना वायरस से बचाया वहीं दूसरी ओर लोगों को मानसिक एवं आर्थिक रूप से बहुत ज्यादा प्रभावित किया साथ ही भारत का प्रत्येक क्षेत्र इससे प्रभावित हुआ है। भारत का कृषि क्षेत्र, उद्योग क्षेत्र एवं सेवा क्षेत्र सभी इस महामारी की चपेट में आ गये है। कई अध्ययनों के अनुसार भारत का सेवा क्षेत्र कोविड-19 से अन्य दो क्षेत्रों की तुलना में अधिक प्रभावित हुआ है। भारत का सेवा क्षेत्र जिसका योगदान सकल घरेलु उत्पाद में, कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्र से ज्यादा है। सेवा क्षेत्र में व्यापार, बैंकिंग, होटल और रेस्तरां, यातायात, परिवहन, भंडारण और संचार, वित्तपोषण, बीमा, शिक्षा, रियल एस्टेट , व्यावसायिक सेवाएं , समुदाय, सामाजिक और व्यक्तिगत सेवाओं, और निर्माण से जुड़ी सेवाओं जैसी विविध गतिविधियाँ शामिल हैं। सेवा क्षेत्र न केवल भारत के सकल घरेलू उत्पाद में प्रमुख क्षेत्र है , बल्कि ये महत्वपूर्ण विदेशी निवेश प्रवाह को आकर्षित करता है , निर्यात में महत्वपूर्ण योगदान देता है और साथ ही साथ बड़े पैमाने पर रोजगार भी प्रदान करता है। ठीक उसी प्रकार देश का सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग भी इस दौरान बहुत हद तक प्रभावित हुए हैं। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ होते है। यह सभी के लिए समान विकास और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए एक इंजन की तरह कार्य करती है।

अध्ययन के उद्देश्य-

वर्तमान शोध का उद्देश्य कोविड-19 के दौरान, लॉक-डाउन के कारण सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग पर पड़ने वाले प्रभावों की जांच करना एवं संभव समाधान तलाश करना है, साथ ही सरकार द्वारा उठाये गए क़दमों का विश्लेषण काना शामिल है।

शोध प्रवधि-

वर्तमान शोध हेतु अनेकोनेक द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन किया गया है जिसमें विभिन्न प्रकार के प्रकाशित शोध पत्र, सरकारी पत्र-पत्रिकाएँ, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय रिपोर्ट आदि शामिल हैं। इस सम्पूर्ण शोध का आधार द्वितीयक स्रोत हैं, जिन्हें इन्टरनेट के माध्यम से एकत्र एवं अध्ययन किया गया है।

सूक्ष्म,लघु और मध्यम उद्योग की भूमिका-

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग को देश के विकास का इंजन कहा जाता है, ये भारतीय अर्थव्यस्था की रीढ़ की हड्डी के रूप में कार्य करता है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग सभी के लिए समान विकास और आर्थिक विकास देने का कार्य करते है साथ ही आय की असमानता को भी कम करने की क्षमता रखते हैं। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग देश में कृषि के बाद सर्वाधिक रोजगार देने वाला क्षेत्र है। ये उद्योग लगभग 12 करोड़ लोगों को आजीविका प्रदान करते हैं। ये उद्योग देश के बड़े उद्योगों के लिए पूरक उद्योग के रूप कार्य करते है साथ ही देश भर के स्थानीय बाजारों की जरूरतों को पूरा भी करते हैं। सुक्षम, लघु और मध्यम उद्योगों में 94.94 % सूक्ष्म आकार के 4.89% लघु आकार के तथा 0.17% मध्यम आकार के हैं। 45% ग्रामीण क्षेत्र में तथा 55% शहरी क्षेत्र में हैं। सुक्षम, लघु और मध्यम उद्योग का देश के सकल घरेलु उत्पाद में 9%, विनिर्माण उत्पाद में लगभग 33.4% तथा निर्यात में 45% का योगदान है।

सूक्ष्म,लघु और मध्यम उद्योग की नई परिभाषा-

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग में दो तरह की इकाई शामिल हैं- एक वह जो उत्पादन करती हैं और दूसरी वह जो सेवा देने का काम करती हैं। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग अधिनियम 2006 के अनुसार प्रारम्भ में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों को विनिवेश के आधार पर परिभाषित किया गया था वर्तमान में इस परिभाषा के आधार को बदलकर एनुअल टर्नओवर (वार्षिक कारोबार) कर दिया गया है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों की संशोधित परिभाषा उत्पादन व सेवा दोनों ही इकाई पर एक सामान लागू होगी। सूक्ष्म उद्योगों में उन इकाइयों को रखा जायेगा जिनका निवेश 1 करोड़ एवं वार्षिक करोबार 5 करोड़ तक हो अर्थात 5 करोड़ से अधिक न हो। लघु उद्योगों में वे इकाई शामिल हैं जिनका निवेश 10 करोड़ एवं वार्षिक कारोबार 50 करोड़ तक होगा और मध्यम उद्योग में वे इकाई शामिल होंगी जिनका निवेश 50 करोड़ तथा वार्षिक कारोबार 100 करोड़ होगा।

वर्तमान में सूक्ष्म,लघु और मध्यम उद्योग की समस्याएं-

कोविड-19 नामक वैश्विक महामारी को रोकने के लिए एवं इसे नियंत्रित करने के लिए देश भर में विशेषत: सामाजिक दूरी एवं लॉक-डाउन जैसे उपायों को अपनाया गया जिससे स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सभी स्तरों पर मांग व पूर्ती की समस्या उत्पन्न हुई है जिसके कारण आयात – निर्यात प्रभावित हुए है, सभी क्षेत्रों के उत्पादन नकारात्मक रूप से प्रभावित हुए है और धीरे – धीरे यह झटका विनिर्माण, खनन, कृषि, लोक प्रशासन, निर्माण - अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में फैल गया है और यह अर्थव्यवस्था के समग्र विकास दर को नीचे लाते हुए निवेश, रोजगार, आय और खपत को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर रहा है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग की अधिकाँश गतिविधियां अपने आपको अस्तित्व में बनाये रखने के लिए रोज-मर्रा के व्यापार पर निर्भर करती है तथा ये सभी लॉक-डाउन एवं मांग में कमी के कारण बहुत सारी कठिनाइयों का सामना कर रही है। अधिकांश सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग लम्बे लॉक-डाउन के चलते बंद होने की स्तिथि में पहुँच गये हैं। उद्योग बंद होने के कारण या कई जगहों पर उत्पादन बंद होने से करोड़ो लोगों की जॉब छिन गई है, मजदूर काम न होने के कारण अपने घरों को लौट गए है। और वर्तमान में लॉक-डाउन खुलने के बाद भी मजदूर काम पर वापिस नहीं आना चाहते है क्योकि उन्हें जॉब सुरक्षा चाहिए, इस समस्या के चलते भी सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को मजदूरों की कमी से जूझना पड रहा है। कच्चे माल की कीमतों में परिवर्तन के कारण घरेलु एवं आयातित पूर्ती भी प्रभावित हुई, कार्यशील पूँजी एवं भविष्य के लिए विनियोग पर भी प्रभाव पडा। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग से जुड़े सभी सेवा क्षेत्र- होटल उद्योग, पर्यटन उद्योग एवं लोजिस्टिक सभी में मंदी देखी गई जो कि अभी भी बहुत हद तक जारी है। उपभोक्ता वस्तुएं, कपडे, जूते-चप्पल, बर्तन, ऑटोमोबाइल आदि पर भी प्रभाव देखा गया साथ ही ऐंसे उद्योग जो कच्चे माल के आयातों पर निर्भर थे उनमे भी बहुत हद तक मंदी देखी गई। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग के सकल घरेलु उत्पाद, रोजगार, और विनिर्माण क्षेत्र में योगदान के आंकड़ो से भी पता चलता है की ये उद्योग किस हद प्रभावित हुए और ये किस हद तक देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते है।

आत्मनिर्भर भारत और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग-

कोविड- 19 महामारी का प्रकोप भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक बहुत बड़ा झटका है। भारत सरकार ने खाद्य सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए अतिरिक्त धनराशि से लेकर सेक्टर से जुड़े प्रोत्साहन और कर की समय सीमा के विस्तार के लिए कई तरह के उपायों की घोषणा की है। उसी के साथ सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों की महत्ता और उसके योगदान को ध्यान में रखते हुए काफी अच्छे और सराहनीय कदम उठाये है जिसके पीछे सरकार का उद्देश्य भारत को आत्मनिर्भर बनाना भी शामिल है। आत्मनिर्भर भारत मुहिम के अंतर्गत भारत सरकार ने सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों के लिए 3 हजार करोड़ रूपये का कोलेट्रल फ्री लोन (ऋण) देने की घोषणा की। कोलेट्रल फ्री लोन से तात्पर्य ऐसे लोन से है जिनके बदले उद्यमी को किसी भी प्रकार की संपत्ति को गिरवी रखने की आवश्यकता नहीं होगी, ऋण की सारी जिम्मेदारी सरकार की होगी। यह ऋण चार वर्ष के लिए होगा, एक वर्ष तक मूलधन भी नहीं चुकाना होगा तथा इसका लाभ 45 लाख इकाइयों को मिलेगा। ये 3 हजार करोड़ रूपये के ऋण सरकार के 20 लाख करोड़ के रहत पैकेज का हिस्सा है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों के विस्तार के लिए 50000 करोड़ रूपये के फण्ड ऑफ फण्ड की भी घोषणा की गई। 4 हजार करोड़ की क्रेडिट गारंटी दी जिससे 2 लाख कम्पनियों को लाभ मिलेगा। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाने के लिए 200 करोड़ तक के टेंडर ग्लोबल नहीं होने की भी घोषणा की गई की जिससे सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों को टेंडर में भाग लेने का मौका मिलेगा साथ ही सरकारी कंपनी को भी इनके उत्पाद खरीदना अनिवार्य किया गया। इ-मार्केटिंग लिंकेज एवं प्रदर्शनी में शामिल होने की सुविधा आदि घोषणाएं भी शामिल हैं। इस ऐलान के बाद एसएमई के लिए मोरेटोरियम अवधि 6 महीने हो गई है. इस फैसले

से उन सभी उद्यमियों को फायदा होगा जिन्होंने अपना उद्यम चलाने के लिए कर्ज ले रखा है. इस अवधि में लोन की किस्त न भरने से उद्यमी डिफाल्टर नहीं माने जाएंगे।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष तौर पर कह सकते है कि सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। जो इस वैश्विक महामारी एवं लॉक-डाउन के चलते बहुत ज्यादा प्रभावित हुई है और लॉक-डाउन खुलने के पश्चात भी ये उद्योग पूरी तरह पटरी पर नहीं आये हैं। नि:संदेह इन उद्योगों को पुन: जीवन देने की सरकार की पहल सराहनीय है, फिर भी अभी सरकार को इस क्षेत्र की ओर ध्यान देना चाहिए, इनके लिए विनियोग और बाजार की समस्या का स्थायी समाधान होना आवश्यक है। इनके उत्पादों की मांग बढ़ने से ही इन उद्योगों को पुन: जीवन मिलेगा। देश के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों में इतनी क्षमता है कि वे सरकार वोकल फॉर लोकल की मुहिम को सफल बना सकते हैं। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों की समस्याओं का स्थायी एवं दीर्घकालीन समाधान आवश्यक है साथ रोजेस्तीं रोडान के बड़े धक्के का अनुशरण भी आवश्यक है ताकि बड़े विनियोग के साथ आर्थिक विकास को दोबारा गति प्रदान की जा सके।

REFERENCES

https://kredx.com/blog/covid-19-impact-on-msmes-its-significance-on-economic-revival/

https://www.thehindu.com/business/Economy/covid-19-pandemic-pulls-indias-service-sector-activity-into-contraction-mode/article31267554.ece

https://www.financialexpress.com/economy/end-of-lockdown-not-end-of-trouble-for-migrant-labour-heres-what-workers-may-face-when-economy-opens/1945443/

https://www.fergusson.edu/upload/document/47654__Mr.GirishJadhav(NMITD).pdf

https://etinsights.et-edge.com/wp-content/uploads/2020/04/KPMG-REPORT-compressed.pdf

https://ideas.repec.org/p/ind/igiwpp/2020-013.html

http://ficci.in/spdocument/23195/Impact-of-COVID-19-on-Indian-Economy-FICCI-2003.pdf

https://www.eepcindia.org/eepc-download/617-Covid19_Report.pdf

https://www.crisil.com/content/dam/crisil/our-analysis/views-and-commentaries/impact-note/2020/march/the-covid-19-fallout.pdf

https://economictimes.indiatimes.com/hindi/news/what-is-the-definition-of-msme/articleshow/75868202.cms?from=mdr

https://www.unionbankofindia.co.in/Hindi/msme-overview-overallhindi.aspx

https://www.businessideashindi.com/msme-registration-process-hindi-%E0%A4%8F%E0%A4%AE%E0%A4%8F%E0%A4%B8%E0%A4%8F%E0%A4%AE%E0%A4%88/

https://newstrack.com/business/small-and-medium-business-in-india-497121.html

https://navbharattimes.indiatimes.com/business/business-news/atmanirbhar-bharat-abhiyan-msme-sector-gets-3-lakh-crore-economic-package-finance-minister-announces-6-big-measures-too/articleshow/75717271.cms

https://economictimes.indiatimes.com/hindi/news/the-msme-economic-package-may-make-small-industry-atamnirbhar/articleshow/76036345.cms?from=mdr